18

कलीसिया जिसने कर लिया था, 2

(3:14-22)

मैं चाहता हूं कि कलीसिया सिद्ध हो, क्या आप भी यही चाहते हैं ? ईश्वरीय पक्ष से यह सिद्ध है; कलीसिया के लिए परमेश्वर का स्वर्गीय नमूना दोष मुक्त है, परन्तु मानवीय पक्ष में, कलीसिया समस्याओं से भरी हुई है, क्योंकि यह लोगों से भरी है और लोग समस्याओं से भरे हैं। यह बात कुछ लोगों को परेशान करती है और वे कलीसिया की कमियों को छिपाने का प्रयास करते हैं। कुछ लोगों को तो यह बात यहां तक परेशान करती है कि वे कलीसिया ही छोड़ जाते हैं।

प्रभु हमेशा कलीसिया की कमियों के बारे में स्पष्ट रहा है। सात कलीसियाओं के नाम पत्रों पर अपने अध्ययन में हमने देखा है कि यीशु यह प्रकट करने में हिचकिचाया नहीं कि उसकी कलीसिया की मण्डलियों के लिए परमेश्वर के लिए अपने प्रेम को छोड़ना (2:4), अभक्तिपूर्ण जीवन बिताना (2:14, 15, 20) और कपट से भरे होना तक हो सकता है (3:1, 2)।

सात कलीसियाओं के नाम पत्रों को पढ़ना घर की स्त्री को चौकस किए बिना उसके घर जाना है कि आप आ रहे हैं। जैसा कि आप इसे देखना पसन्द करते हैं उसके बजाय आपको समाचार पत्रों और पत्रिकाओं, बिखरे हुए खिलौनों, फर्श पर पड़े कपड़ों, जूठे बर्तनों, खाली डिब्बों और कोनों में कूड़ा जमा हुआ मिलता है और यही बैठक वाला कमरा है![1]

हमारे लिए यह समझना आवश्यक है कि प्रभु ने चाहे अलग-अलग मण्डलियों के पाप की अनुमति नहीं दी और उन्हें मन फिराने की आज्ञा दी, परन्तु इसके बावजूद वह उनसे *प्रेम करता* था। लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र के अलावा और कहीं भी यह इतना स्पष्ट नहीं है। मण्डली के लोगों के बारे में यीशु के पास कहने को कोई अच्छी बात नहीं थी, परन्तु इसके बावजूद वह उनसे प्रेम करता था (3:19)। इसी प्रकार मुझे और आपको भी कलीसिया में पाई जाने वाली कमियों के बावजूद उससे प्रेम करना चाहिए। यदि हम कलीसिया की कमियों के कारण उससे प्रेम करना नहीं सीखते तो हम इससे कभी प्रेम नहीं कर पाएंगे, क्योंकि इसमें कमियां हमेशा से थीं और हमेशा रहेंगी।

एक समीक्षा (3:14-17)

पिछले पाठ में हमने लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र का अध्ययन आरम्भ किया है। हमने उस नगर के लोगों के तीन विवरणों पर ध्यान देते हुए आरम्भ किया था: (1) *धनवान:* लौदीकिया सम्भवतया एशिया का सबसे धनवान नगर था। (2) *स्वस्थ:* निकट का चिकित्सा केन्द्र एक प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल था। (3) *अच्छे कपड़े पहने:* लौदीकिया उच्च स्तर की काली ऊन से बने वस्त्रों में विशेषज्ञता प्राप्त फैशन का केन्द्र था। (पिछले पाठ में चार्ट देखें।) लोगों के व्यवहार को ''हमें कोई ज़रूरत नहीं। हमारे पास सब कुछ है!'' शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है।

हमने देखा कि यीशु ने अपने आप को ''आमीन और विश्वासयोग्य, और सच्चा गवाह'' (आयत 14ख) अर्थात वह कहा जिसने वस्तुओं को वैसे ही देखा, जैसे वे थीं और जिस पर उसके अवलोकन में भरोसा किया जा सकता था। लौदीकिया के मसीही लोगों के बीच उसका अवलोकन क्या था? यीशु ने कहा कि वे ''न तो ठंडे हैं और न गर्म'' थे, बल्कि ''गुनगुने'' (आयतें 15, 16) थे, जो ऐसी स्थिति थी, जिससे उसके पेट में गड़बड़ हो गई थी! उसने कहा कि गुनगुने होने के बजाय अच्छा यह होता कि (या तो) वे ''ठण्डे'' होते या ''गर्म'' (आयत 15)।

एक बार दो लड़के एक छोटे लाल छकड़े से खेल रहे थे। एक लड़का दूसरे को खींच रहा था, परन्तु छकड़े के अन्दर बैठे लड़के की टांगें बाहर लटकी हुई थीं और वह पांव घसीटते हुए जा रहा था। अन्त में छकड़ा खींच रहा लड़का रुक गया और बीच में बैठे लड़के से कहने लगा, ''या तो अन्दर हो जाओ या बाहर निकल आओ, पर पांव घसीटना बन्द करो[2] क्योंकि इससे मेरा बहुत ज़ोर लग रहा है!''

सुझाव दिया गया था कि यीशु चाहता था कि लौदीकिया के मसीही गुनगुने होने के बजाय ठण्डे हो जाएं, क्योंकि (1) ठण्डे होना अधिक ईमानदारी वाला है, (2) गुनगुने व्यक्ति को बदलने के बजाय ठण्डे व्यक्ति को बदलना आसान है और (3) ठण्डे लोग कलीसिया को उतनी हानि नहीं पहुंचाते, जितनी गुनगुने पहुंचाते हैं।

फिर हमने देखा था कि लौदीकिया की कलीसिया में नगर वाला व्यवहार आ गया था। आयत 17क कहती है, ''तू जो कहता है, कि मैं धनी हूं, और धनवान हो गया हूं, और मुझे किसी वस्तु की घटी नहीं।'' वे लोग उदासीनता को गुण मानते थे! लोगों को अपना परिश्रम थका देने वाला लग सकता है और दूसरों को यह सराहनीय लग सकता है; दर्शक खेल प्रतियोगिता को देखने के लिए उत्साहित हो सकते हैं और उन्हें ''प्रशंसक'' कहा जाता है। परन्तु कइयों को लगता है कि धर्म के बारे में अति उत्साहित होना स्वाद रहित है।

किसी ने गुनगुना होने को कलीसिया में ''ट्रॉयन हॉर्स'' कहा है। ''ट्रॉयन हॉर्स'' शब्द यूनानी-ट्रॉयन युद्ध से निकला है,[3] जिसमें यूनानियों ने उत्तर-पश्चिमी एशिया माइनर में स्थित ट्रॉय नगर पर कब्जा कर लिया था। यह युद्ध बराबरी पर पहुंच गया, जब यूलिसेस[4] ने उपहार के रूप में ट्रॉयन लोगों को लकड़ी का एक बड़ा घोड़ा भेंट करने का विचार दिया।

ट्रॉय राजा की पुत्री कैसेंड्रा ने इस उपहार को ठुकराने का आग्रह किया: ''मुझे यूनानियों से डर लगता है, चाहे वे उपहार ही ला रहे हों।'' कैसेंड्रा की सलाह को नज़रअन्दाज कर दिया गया और उपहार का घोड़ा चारदीवारी में लाया गया। उसी रात यूनानी सिपाही घोड़े से निकले, नगर के फाटक खोलकर यूनानी सेना में घुस गये। ट्रॉयन लोग हार गए और नगर नष्ट हो गया।

गुनगुनेपन को ''ट्रॉयन हॉर्स'' अर्थात ''ट्रायन घोड़ा'' कहा गया है, क्योंकि इसे हमारे बीच में सह लिया जाता है। यह ख़तरनाक नहीं लगता, क्योंकि यह सक्रिय रूप से प्रभु के काम का विरोध नहीं करता, बल्कि मित्र होने का दिखावा करता है, परन्तु हमें सचेत रहना चाहिए कि गुनगुनापन शैतान के दलों के लिए द्वार खोल सकता है। यह कलीसिया के विनाश का कारण भी बन सकता है। इसने यीशु को दुखी किया था और इससे हमें भी दुखी होना चाहिए! गुनगुनेपन ने लौदीकियों को ''अभागा और तुच्छ और कंगाल और अन्धा, और नंगा'' (आयत 17ख) कर दिया था। उनकी स्थिति और उपचार के लिए नीचे दिया चार्ट देखें।

उपचार (3:18, 19ख)

लौदीकिया की कलीसिया की आत्मिक स्थिति गम्भीर थी, परन्तु आशाहीन नहीं। यीशु ने कहा:

> मैं तुझे सम्मति देता हूं,[5] कि आग में तपाया हुआ सोना मुझ से मोल ले,[6] कि धनी हो जाए; और श्वेत वस्त्र ले ले कि पहिनकर तुझे अपने नंगेपन की लज्जा न हो;[7] और अपनी आंखों में लगाने के लिए सुर्मी ले, कि तू देखने लगे (आयत 18)।

नगर (और कलीसिया)	स्थिति (आयत 17)	उपचार (आयत 18)
धनवान (बैंकिंग)	निर्धन	तपाया हुआ सोना
स्वास्थ्य केन्द्र (आंखों में विशेषज्ञता)	अंधा	श्वेत वस्त्र
वस्त्र उद्योग (काली ऊन)	नंगा	सुरमा

आत्मिक रूप में धनी होने के लिए उन्हें सांसारिक सम्पत्ति पर भरोसा रखने के बजाय, उन्हें उस सच्चे धन अर्थात ''आग में तपाया हुआ सोना''[8] की खोज करनी चाहिए थी, जो केवल प्रभु से मिल सकता और अध्यात्मिक रीति से धनवान बनाता है। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा था:

> अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं (मत्ती 6:19, 20)।[9]

यह सोचने के बजाय कि उनके काले सुन्दर वस्त्र काफ़ी थे, यीशु के पाठकों को अपने आप को पहनाने के लिए ''श्वेत वस्त्रों'' की आवश्यकता थी, जिससे उनका आत्मिक नंगापन दिखाई न दे। श्वेत (या शुद्ध) वस्त्र का संकेत प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दो बातों पर ज़ोर देता है: (1) ''श्वेत वस्त्र पहिने हुए'' (7:13) वे लोग हैं ''जिन्होंने अपने-अपने वस्त्र मेमने के लोहू में से धोकर श्वेत किए हैं'' (7:14)। श्वेत वस्त्र पहनने के लिए, लौदीकिया के मसीही लोगों को अपने आप पर नहीं, बल्कि यीशु पर भरोसा रखना आवश्यक था। (2) 19:8 में मसीह की दुल्हन को ''शुद्ध और चमकदार महीन मलमल'' पहने[10] दिखाया गया है और हमें बताया गया है कि ''महीन मलमल का अर्थ पवित्र लोगों के धर्म के काम हैं।'' लौदीकिया के मसीही लोगों के श्वेत वस्त्र पहनने के लिए परमेश्वर के बालकों के रूप में फिर से जीवन आरम्भ करना आवश्यक था।

फरुगी सुरमे पर भरोसा रखने के बजाय उन्हें अपनी आंखों पर लगाने के लिए स्वर्गीय ''सुरमे'' की इच्छा करनी चाहिए थी, ताकि वे जीवन को वैसे देख सकते, जैसे वास्तव में यह है।[11] उन्हें एक नये परिप्रेक्ष्य की आवश्यकता थी, जो केवल परमेश्वर के वचन का अध्ययन और उसकी इच्छा को मानने से आ सकती थी।

आयत 18 में यीशु की ताड़ना में ''मोल ले'' शब्द पर ध्यान दें: ''मैं तुझे सम्मति देता हूं कि आग में तपाया हुआ सोना मुझ से *मोल ले* ..., और श्वेत वस्त्र ले ले ... और आंखों में लगाने के लिए सुरमा ले ...'' हम उन आत्मिक वस्तुओं को, जिनका यीशु ने उल्लेख किया पैसे देकर खरीद (या कमा) नहीं सकते,[12] परन्तु आज भी उनका कुछ *दाम* है अर्थात वह दाम जो चुकाया जाना आवश्यक है। लौदीकिया के लोगों को अपनी उदासीनता, अपने आत्मसंतुष्ट होने की सोच और अपने घमण्ड को त्यागना आवश्यक था।

फिर यीशु ने ज़ोर दिया कि उन्हें अपने व्यवहार को बदलकर अपने जोश को फिर से जगाने की आवश्यकता थी: ''इसलिए सरगर्म हो,[13] और मन फिरा''[14] (आयत 19ख)! ''सरगर्म'' शब्द उसी शब्द का अनुवाद है, जिससे आयत 15 और 16 वाला ''गर्म'' शब्द लिया गया है। प्रभु गुनगुनेपन से ठण्डे होने को प्राथमिकता देता है (3:15), परन्तु *वास्तव में* उसकी इच्छा यह है कि उसके लोगों में आग हो! गुनगुना मसीही और ठण्डा अविश्वासी दोनों ही नाश होंगे अर्थात परमेश्वर के केवल सरगर्म लोग ही आशीष पाएंगे!

कारण (3:19क, 20)

यीशु ने ऐसी कठोर भाषा का इस्तेमाल किया था कि लौदीकिया की कलीसिया के कई लोगों ने निष्कर्ष निकाला होगा कि वह उनसे घृणा करता है। इस कारण उसने साथ ही

कह दिया, ''जिससे मैं *प्रेम करता हूं,*[15] उसकी ताड़ना भी करता हूं'' (आयत 19क)। कुछ लोग डांट और ताड़ना को शत्रुता मानते हैं, परन्तु ईश्वरीय अनुशासन प्रेम का प्रगटावा होता है। इब्रानियों के लेखक ने लिखा है, ''प्रभु जिससे *प्रेम करता है,*[16] उसकी ताड़ना भी करता है और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगाता है'' (इब्रानियों 12:6)।[17] किसी की जान को खतरे में देखकर चुप रहना प्रेम का नहीं, बल्कि प्रेम के अभाव का संकेत है।

लौदीकिया के मसीही लोगों के प्रति अपने प्रेम को दिखाने के लिए यीशु ने पवित्र शास्त्र का सबसे आकर्षित करने वाला निमन्त्रण दिया: ''देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं;[18] यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा तो मैं उसके पास भीतर आकर[19] उसके साथ भोजन करूंगा,[20] और वह मेरे साथ'' (आयत 20)।

लौदीकिया के लोगों को यह शब्द चौंकाने वाले लगे होंगे, क्योंकि यीशु यह बता रहा था कि उन्होंने उसे अपने हृदयों और जीवनों से निकाल दिया था। उन्हें शायद यह पता नहीं था कि उन्होंने ऐसा किया है। यह हम में से किसी के साथ भी हो सकता है, विशेषकर यदि हम प्रभु के प्रति अपने समर्पण से संतुष्ट हो जाते हैं।

इसके साथ ही, यीशु के शब्दों से लौदीकिया के लोगों को प्रोत्साहन मिलना चाहिए था, क्योंकि उसने उन्हें आश्वासन दिया कि वह उनके साथ फिर से निकट सम्बन्ध चाहता था। उस समय में (जैसा कि आज भी है), किसी के साथ भोजन करने का अर्थ उसके साथ संगति करना था।[21] यीशु के पत्र से संकेत मिला कि इस संगति को फिर से बहाल किया जा *सकता* था, *यदि* मसीही लोग उसके मार्ग की ओर लौट आएं।

यीशु ऐसा होते तो देखना चाहता था, परन्तु उसने उनके जीवनों में अपने मार्ग को ज़बर्दस्ती नहीं लाना था; उसने किसी के हृदय में प्रवेश करने के लिए उसका द्वार नहीं तोड़ना था, बल्कि वह उनका ध्यान खींचने और अन्दर आने के लिए कहने को द्वार पर बाहर धीरज से प्रतीक्षा कर रहा था। निर्णय लेना उनका काम था।[22]

द्वार पर मसीह का सबसे प्रसिद्ध चित्रण होलमैन हंट की ''लाइट ऑफ़ द वर्ल्ड'' नामक पेंटिंग में मिलता है। उस तस्वीर में यीशु हाथ में एक लैंप लिए द्वार पर खड़ा है। द्वार इतने समय से बन्द है कि उस पर काई जम गई है। तौ भी यीशु धीरज से खटखटाना जारी रखता है। बताया जाता है कि जब श्रीमान हंट ने इस पेंटिंग को पूरा किया तो उन्होंने एक मित्र को इसे देखने के लिए कहा। मित्र ने उस तस्वीर को देखकर कहा, ''पर यह तस्वीर तो अधूरी है। तुम द्वार के बाहर सिटकनी लगाना तो भूल ही गए।'' श्रीमान हंट ने कहा, ''मैंने जान-बूझकर इसे रंग दिया है। देखो न, द्वार मानवीय हृदय है और हृदय केवल अन्दर से ही खुल सकता है।''

परिणाम (3:21, 22)

यदि लौदीकिया की कलीसिया अपनी आत्मिक निष्क्रियता पर काबू पा लेती, तो आगे अद्‌भुत आशिषें मिलने वाली थीं। यीशु ने कहा, ''जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर[23] अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर

बैठ गया''[24] (आयत 21)। यीशु के साथ उसके सिंहासन पर बैठने का अर्थ उसके साथ राज करना है![25] लौदीकिया के लोग उस नगर के लोग होने पर गर्व महसूस करते थे; यीशु के साथ उसके सिंहासन पर राज करना इससे भी कितना बड़ा सम्मान होना था!

एक बार फिर, यीशु ने चाहा कि इसे हम अपने ऊपर लागू करें: ''जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (आयत 22)।

सारांश

सात कलीसियाओं के अपने अध्ययन की समाप्ति पर आकर मैं 3:20-22 में यीशु के शब्दों से बेहतर शब्दों के साथ समाप्ति करने की कल्पना नहीं कर सकता। ये शब्द लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र की समाप्ति के लिए ही उपयुक्त नहीं हैं, बल्कि सभी पत्रों के लिए उपयुक्त निष्कर्ष उपलब्ध कराते हैं:

> देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ। जो जय पाए, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया। जिसके कान हों वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है।

यीशु का निमन्त्रण और प्रतिज्ञा मण्डली के लिए नहीं, बल्कि निजी है: ''यदि *कोई* मेरा शब्द सुनकर ... *जो* जय पाए ...।'' यीशु हर व्यक्ति के लिए बाहें फैलाए खड़ा है।

वह उन सब को, जिन्होंने उसे कभी अपने जीवनों में आने नहीं दिया, बुलाता है। वह ''चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहचान लें'' (1 तीमुथियुस 2:4)। यदि आप उस पर विश्वास करते हैं, तो आप ''मसीह में'' बपतिस्मा ले सकते हैं, जिससे आप अपने आप को ''मसीह के साथ'' ढांप लें (गलातियों 3:26, 27)। आप उसका एक भाग बन जाएंगे और वह आपका भाग बन जाएगा।

परन्तु हमें इस बात को मन से नहीं निकालना चाहिए कि प्रकाशितवाक्य 3:20 में यीशु का निमन्त्रण सबसे पहले परमेश्वर के उदासीन बालक के लिए है। लौदीकिया के लोगों की तरह, हम में से जो लोग मसीही हैं, अनजाने में यीशु को अपने जीवनों से निकाल सकते हैं। अपने जीवनों में झांकने का समय निकालें: क्या आप मसीहियत के प्रति एक बार फिर से सरगर्म हैं? क्या आप यीशु के कभी इतना निकट रहे हैं? कालांतर में क्या आप उसकी उपस्थिति से अधिक परिचित थे? क्या यह हो सकता है कि यीशु अभी आपके दिल के द्वार पर खड़ा खटखटा रहा हो? यह पाठ आपका ध्यान अपनी ओर दिलाने के लिए प्रभु का ढंग हो सकता है। यदि आप सेवा करने में गुनगुने हो गए हैं, तो मेरी प्रार्थना है कि आज ही मन फिराएं और आप वापस उसके पास लौट आएं (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16; 1 यूहन्ना 1:9)।

यदि यीशु आपके मन में नहीं आया है, तो मैं चाहता हूं कि मैं इसमें आपकी सहायता करूं। मृत्यु के एक सांस की दूरी पर होने पर भी पुरुषों और स्त्रियों को हिचकिचाते देख

मुझे दुख होता है। निश्चय ही मैं आपके लिए प्रभु की आज्ञा को नहीं मान सकता; निर्णय आप ही ले सकते हैं। यदि आपने अभी तक निर्णय नहीं लिया है, तो मेरी प्रार्थना है कि इसी समय आप अपने पापों से मन फिराकर अपना जीवन उसे देते हुए उसकी आज्ञा मान लें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

लौदीकिया पर इस दूसरे पाठ को ''उत्तम प्रतिज्ञा'' कहा जा सकता है। लौदीकिया की कलीसिया के नाम पत्र पर पाठों के लिए इस्तेमाल होने वाले अन्य शीर्षकों में ''बीमार समाज,'' ''मसीह के लिए गम्भीर हो जाओ!'' और ''बन्द द्वार वाली कलीसिया'' (फिलाडेल्फिया की कलीसिया के उलट जिसका द्वार खुला था) हो सकते हैं। वारेन वियर्सबे ने यह कहते हुए कि उन्होंने अपना उत्साह (3:16, 17) ''अपने गुण'' (3:17, 18क), अपना दर्शन (3:18ख) और अपना वस्त्र (3:17-22) खो दिया था।[26]

सात कलीसियाओं पर प्रचार करते हुए कुछ लोग ''[स्थानीय मण्डली] के नाम पत्र'' पर एक प्रवचन जोड़ देते हैं। ऐसा करने के बजाय मैं आम तौर पर इतना ही पूछता हूं, ''यदि प्रभु यहां की कलीसिया के नाम पत्र लिख दे? मुझे नहीं पता कि वह क्या कहेगा?'' अपने सुनने वालों को इस पर विचार करने के लिए कुछ समय देकर,[27] मैं ध्यान दिलाता हूं कि अधिकतर मण्डलियों में आसिया की सात कलीसियाओं वाली सामर्थ और निर्बलताओं का *मिश्रण* है और फिर ध्यान दिलाता हूं कि ''यह मण्डली कोई अपवाद नहीं है।'' तब मैं कहता हूं ''इससे भी महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यदि प्रभु ने आज *मुझे* पत्र लिखना हो तो वह क्या कहेगा?'' मैं उपस्थित लोगों में हर किसी से इसे *व्यक्तिगत* बनाने का आग्रह करता हूं।[28]

टिप्पणियां

[1]यह दृश्य हर घर का नहीं है, परन्तु कई घरों में ऐसा ही होता है। अपनी बात समझाने के लिए यह अतियुक्ति है, और बहुत से सुनने वाले इसे समझते हैं। आप जहां रहते हैं, वहां के लिए उपयुक्त दृश्य ले सकते हैं। [2]जहां मैं रहता हूं वहां ''पांव घसीटना'' का इस्तेमाल उस अलंकार के रूप में किया जा सकता है, जिसका अर्थ हिचकिचाना और देर करना उन्नति में रुकावट बनना है। आपके यहां भी ऐसे ही शब्द का इस्तेमाल होता होगा। [3]यह युद्ध होमेर की *इलियाड* और *ओडिसी* नामक वीरगाथाओं का विषय था। इन वृत्तांतों में चाहे यूनानी मिथ्या की भरमार है, परन्तु स्पष्टतया वे बारहवीं शताब्दी ई.पू.में होने वाली वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं। [4]यूलिसेस उसके नाम का लातीनी रूप है, जिससे हम में से अधिकतर लोग उसके यूनानी नाम ओडीसिस की तुलना में अधिक परिचित हैं। [5]''मैं सम्मति देता हूं'' शब्द अद्भुत है! संसार के प्रभु, यीशु ने उन्हें आज्ञा नहीं, बल्कि सलाह दी थी! निश्चय ही जब प्रभु ''सलाह'' देता है तो हमें उसकी माननी चाहिए। [6]सभी आत्मिक आशिषों का देने वाला यीशु ही है (इफिसियों 1:3)। [7]पिछले पाठ में ''नंगा'' शब्द पर टिप्पणियां देखें। [8]देखें 1 पतरस 1:7. [9]देखें मत्ती 19:21. [10]KJV में ''शुद्ध और श्वेत'' है।

[11]आत्मिक अंधेपन की चर्चा के लिए देखें यूहन्ना 9:39-41. [12]देखें रोमियों 4:1-5, इफिसियों 2:8, 9 तथा अन्य पद। [13]इस आज्ञा में वर्तमानकाल का इस्तेमाल हुआ है, जो निरन्तर क्रिया का संकेत है। यीशु चाहता

था कि भविष्य में वे *निरन्तर* सरगर्म रहें, चाहे कालांतर में *निरन्तर* गुनगुने रहे थे। [14]''मन फिरा'' अनिश्चित भूतकाल में है, जो एक ही बार निर्णय लेने के कार्य का संकेत है। [15]यहां स्नेही ''प्रेम'' का यूनानी शब्द (*philia*) इस्तेमाल हुआ है। [16]इस पद में ''प्रेम'' के लिए नये नियम का अधिक प्रचलित शब्द (*agape*) का इस्तेमाल हुआ है, परन्तु मूल अर्थ प्रकाशितवाक्य 3:19 वाले शब्द का ही प्रयोग है। [17]यह पद नीतिवचन 3:12 से लिया गया है और इसका अर्थ भजन संहिता 119:75 के लिए भी हो सकता है। [18]यहां वर्तमानकाल का इस्तेमाल हुआ है; यीशु *निरन्तर* खटखटा रहा है। खटखटाने और बुलाने का संकेत (बुलाने का संकेत ''मेरा शब्द सुनकर'' वाक्यांश से स्पष्ट होता है) यीशु के हमारे मनों में आकर रहने की इच्छा का संकेत हो सकता है। यदि सुनने वाला यह जानने की जिद्द करे कि यीशु *कैसे* खटखटाता और बुलाता है तो यह वाक्य काम आ सकता है: ''वह परिस्थितियों के द्वारा 'खटखटाता' और अपने वचन के द्वारा बुलाता है'' (वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमेंट्री*, अंक 2 [व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स,1989], 581)। [19]देखें यूहन्ना 14:23. [20]यूनानी शब्द का अनुवाद ''भोजन करूंगा'' दिन के मुख्य भोजन के लिए इस्तेमाल होने वाले शब्द का रूप है,जो चाय के साथ बिस्कुट आदि लेने के लिए नहीं, बल्कि पेट भर खाना था।

[21]''स्वर्गीय दावत'' की बात भी हो सकती है। (देखें लूका 22:30; प्रकाशितवाक्य 19:9.) [22]यदि उन्होंने उसकी पुकार को नजरअंदाज़ किया था, तो उनका न्याय होने वाला था। देखें याकूब 5:9, जहां यीशु को द्वार पर खड़े *न्यायी* के रूप में दिखाया गया है। [23]यीशु ने एक बार फिर जोर दिया कि उन पर ऐसी कोई बात नहीं पड़ेगी, जो उसने न सही हो। उस पर मृत्यु पड़ी थी और वह विजयी रहा था। एक गीत है जिसके बोल हैं, ''यदि तुम क्रूस नहीं उठाते, तो मुकुट नहीं पा सकते''। [24]यीशु ने जी उठने के द्वारा क्रूस पर विजय पा ली। फिर वह वापस स्वर्ग पर उठाए जाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया (प्रेरितों 2:30-36)। [25]यह बात मसीही लोग यीशु के साथ राज करते हैं प्रकाशितवाक्य पुस्तक की महान सच्चाई है। शाही परिवार के रूप में हम अब उसके साथ राज करते हैं (1:6; 5:10; देखें रोमियों 8:17; इफिसियों 2:6)। मरने तक विश्वासी रहने वाले उसके साथ ''सर्वदा'' राज करेंगे (22:5; देखें 2 तीमुथियुस 2:12)। उसके साथ हमारे राज करने पर और चर्चा के लिए, इस पुस्तक में 5:10 पर नोट्स देखें। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के आगामी भाग ''प्रकाशितवाक्य, 5'' में ''मसीह के साथ राज करना!'' में 20:4, 6 पर नोट्स और उसी भाग में ''स्वर्ग की याद में'' पाठ में 22:5 पर नोट्स देखें। [26]वियर्सबे, 579-81. [27]कक्षा की स्थिति में छात्रों को प्रश्न का उत्तर देने का अवसर दिया जा सकता है। [28]अधिकतर लोग *निजी* कमियों के बजाय *मंडली* की कमियों की ओर ध्यान दिलाने को प्राथमिकता देते हैं।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों में हमेशा से समस्याएं रही हैं? क्यों? क्या इसका अर्थ यह है कि हमें कलीसिया से प्रेम नहीं करना चाहिए?
2. 3:18 में यीशु द्वारा दिया जाने वाला ''आग में तपाया हुआ सोना'' क्या है?
3. ''श्वेत वस्त्र'' क्या हैं?
4. ''सुरमा'' क्या है?
5. हम आत्मिक वस्तुएं किस अर्थ में ''मोल'' लेते हैं?
6. 3:19 के अनुसार, यीशु ने इस कलीसिया को इतनी ज़ोर से क्यों डांटा?
7. क्या आप इस कथन से सहमत हैं या असहमत? ''किसी की जान को खतरे में देखकर चुप रहना प्रेम का नहीं, बल्कि प्रेम के अभाव का संकेत है''?
8. 3:20 में ''द्वार'' किसे कहा गया है?
9. क्या परमेश्वर के किसी बालक के लिए अपने हृदय और जीवन से यीशु को निकाला

जाना सम्भव है ? लौदीकिया के लोगों ने गुनगुने होकर ऐसा किया था। कुछ और ढंग क्या हैं, जिससे यीशु को अपने जीवन में से निकाल सकते हैं ?

10. यदि हमें यह पता चले कि हमने यीशु को निकाल दिया है, तो हम उसे वापस कैसे ला सकते हैं ?
11. यीशु ने 3:21 में जय पाने वालों से क्या प्रतिज्ञा की ?